ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 30 कुल पृष्ठ-8 16 से 22 मई, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 वै. शु.-11

आर्य समाज भिलाई, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़ में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का किया गया भव्य स्वागत

देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज का रहा ऐतिहासिक योगदान

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़ में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्बोधन

छत्तीसगढ़ में आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने के लिए हम प्राण-पण से कृत संकल्प हैं

– अवनी भूषण पुरंग

23 जून, 2019 को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का किया जायेगा विशाल आयोजन

– डॉ. कमल नारायण आर्य

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित मंत्री आचार्य कमल नारायण आर्य के सुपुत्र चि. वेदांशु के विवाह के अवसर पर आयोजित समारोह में सम्मिलित होने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी 12 मई, 2019 को छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में नव–दम्पत्ति को आशीर्वाद देने के लिए पहुँचे। स्वामी जी का रायपुर हवाई अड्डे पर सभा के पदाधिकारियों ने भव्य स्वागत किया। स्वागत करने वालों में मुख्यतया डॉ. कमल नारायण आर्य, श्री राकेश दुबे, डॉ. अजय आर्य, श्री नरेश कुमार झारिया, श्रीमती मंजू दुबे, आचार्य कोमल कुमार गुरुकुल कोसरंगी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। हवाई अड्डे से स्वामी जी सीधे आर्य समाज भिलाई पहुँचे, जहां आर्य समाज भिलाई तथा छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री अवनी भूषण पुरंग ने अपने समाज के सभी प्रमुख सहयोगियों सहित स्वामी जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। स्वागत के पश्चात् आर्य समाज के सत्संग भवन में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ।

अपने उद्बोधन में स्वामी जी ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका ऐतिहासिक रही है। आर्य समाज की भट्टी में तप कर निकले अनेक महापुरुषों ने अपना बलिदान देकर आजादी के आन्दोलन के इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित करवाया है। इतने संघर्षों एवं बलिदानों से प्राप्त आजादी के 72 वर्ष बीत जाने के बाद भी देश में विभिन्न ज्वलन्त समस्याओं को लेकर आर्य समाज को एक बार फिर कमर कसकर आगे आना होगा। देश में बढ़ती हुई नशाखोरी, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, धार्मिक पाखण्ड एवं अन्धविश्वास, महिला उत्पीड़न तथा शोषण ऐसी विकट समस्याएं बन चुकी हैं जिनसे लड़ने के लिए आर्यजनों को अन्य सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर आन्दोलन करना होगा। स्वामी जी ने राजनैतिक दलों द्वारा घोषित किये जाने वाले घोषणा पत्रों को ढकोसला बताते हुए कहा कि किसी भी दल ने उक्त समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया है। अतः समाज की बिखरी हुई शक्ति को संगठित करके सप्तक्रांति के उपरोक्त बिन्दुओं पर जब तक प्रचण्ड आन्दोलन नहीं चलाया जायेगा तब तक देश आगे नहीं बढ़ सकता है।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ की सुन्दर व्याख्या करते हुए कहा कि यज्ञ का अर्थ सेवा, परोपकार, समर्पण एवं त्याग ही होता है। राष्ट्र की सेवा के लिए चलाया जाने वाला आन्दोलन भी एक बहुत बड़ा यज्ञ होगा जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी आहुति दे सकेगा।

स्वामी जी ने छत्तीसगढ़ में आर्य समाज को गांव–गांव तक पहुँचाने के लिए सभा के पदाधिकारियों को प्रेरित किया और कहा कि युवा पीढ़ी को अधिक से अधिक आर्य समाज में दीक्षित किया जाना चाहिए।

इस अवसर पर सहारनपुर से पधारे श्री अमरेश आर्य, युवा भजनोपदेशक के भजनों का भी सुन्दर कार्यक्रम हुआ। जिसे श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध होकर सुना।

सायं 7 से 10 बजे तक गुजराती समाज भवन में आयोजित चि. वेदांशु एवं आयु. श्रद्धा के सम्मान समारोह में स्वामी आर्यवेश जी का प्रभावशाली प्रवचन हुआ जिसमें नगर के सैकड़ों गणमान्य परिवारों ने भाग लेकर स्वामी जी के विचारों को तन्मयता से सुना। स्वामी जी ने विवाह के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए संस्कारों की सरल एवं प्रभावशाली व्याख्या की। विदित हो कि आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान डॉ. कमल नारायण आर्य के सुपुत्र चि. वेदांशु का विवाह सौ. श्रद्धा के साथ होने के उपरान्त सम्मान समारोह का आयोजन गुजराती समाज भवन में किया गया था जिसमें गणमान्य लोगों ने नव–दम्पत्ति को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। स्वामी आर्यवेश जी ने भी विशेष रूप से इस समारोह में सम्मिलित होकर नव–दम्पत्ति वेदांशु एवं श्रद्धा को कोटिशः आशीर्वाद प्रदान किया।

स्वामी आर्यवेश जी का आर्य समाज भिलाई एवं नव–दम्पत्ति सम्मान समारोह में जिन महानुभावों ने सम्मान किया उनमें मुख्य रूप से प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री अवनी भूषण पुरंग, प्रान्तीय सभा के मंत्री श्री कमल नारायण आर्य, श्री राकेश दुबे, डॉ. अजय आर्य, श्री मृत्युंजय शर्मा उपप्रधान आर्य समाज, श्री अरुण ग्रोवर कोषाध्यक्ष, डॉ. सत्येन्द्र कुमार, श्री भगोलीवाल, श्री के.एम. गिरधर, श्री कौशल किशोर, श्रीमती गिरिजा देवी, श्री रवि आर्य, श्री शिव कुमार नागपुर, श्री विनोद जायसवाल, श्री रामकुमार, श्रीमती सविता आर्या, श्री नरेश कुमार झारिया, चि. ज्ञानेन्द्र प्रताप राजपूत सुपुत्र श्री राजेश कुमार राजपूत, श्री गौरव जायसवाल सुपुत्र श्री विनोद जायसवाल के नाम उल्लेखनीय हैं।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

इस धीमे जहर में भी कम खतरे नहीं

– अभिषेक कुमार सिंह

कीटनाशक हम तक दो तरीकों से पहुंच रहे हैं। एक तो मक्खी, मच्छर, तिलचट्टों के खिलाफ हम खुद इनका इस्तेमाल करते हैं दूसरे, फसलों पर छिड़के जाने वाले कीटनाशकों के अंश फल, सब्जी और अनाजों के जरिये हम तक पहुंच रहे हैं सरकार द्वारा कीटनाशकों के संतुलित प्रयोग के संबंध में जरूरी इंतजाम न करने के पीछे हो न हो, सालाना 35 करोड़ डॉलर का कारोबार करने वाली कीटनाशक व रासायनिक खाद उत्पादन इंडस्ट्री का कोई दबाव हो

इंसान के लिए बाह्य संक्रमणों और कीटों से निपटना सदियों पहले भी समस्या था, आज भी है। फर्क महज इतना पड़ा है कि आज हमारे पास विज्ञान की बदौलत विकसित कीटनाशक और वे रसायन हैं जो कीटों और संक्रमणों से हमें काफी हद तक निजात दिलाते हैं। खेतों में फसलें सुरक्षित रहती हैं तो घरों में दीमक, तिलचट्टों (क्रॉकोच), मक्खी–मच्छरों से सुरक्षा। लेकिन कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रचलन सेहत की बलि भी ले रहा है। खेत–खलिहान हों या घर– हर जगह कीटनाशकों के इस्तेमाल की सलाह दी जा रही है, पर कोई यह नहीं बता रहा कि कितनी मात्रा तक इनका इस्तेमाल सुरक्षित है।

ये कीटनाशक दो तरीकों से हम तक पहुंच रहे हैं। मक्खी, मच्छर, तिलचट्टों के खिलाफ हम खुद इनका इस्तेमाल करते हैं, दूसरे, फसलों पर छिड़के जाने वाले कीटनाशकों के अंश फल, सब्जी और अनाजों के जरिये हम तक पहुंचते हैं। कुछ अरसे से कस्बों–शहरों से मच्छरदानियां तकरीबन गायब हो गई हैं और बिजली से चलने वाले मॉस्किटो रिप्लेंट्स तेजी से प्रचलन में आए हैं। कोई यह नहीं सोच रहा कि कहीं इनका इस्तेमाल स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव तो नहीं छोड़ रहा है। लोग मच्छरों के प्रकोप से बच आराम से सोने के बावजूद आंखों में जलन, सुस्ती, चक्कर की शिकायत जरूर करते हैं लेकिन यह बात उनके जेहन में नहीं आती कि कहीं इसका कारण मॉस्किटो रिप्लेंट ही तो नहीं है। कुछ समय पहले अमेरिका के ड्यूक विवि के फार्माक्लॉजिस्ट मोहम्मद अबु–डोनिया ने मॉस्किटो रिप्लेंट में इस्तेमाल 'डीट' रसायन का चूहों पर किए प्रयोग में पाया कि इसके प्रभाव क्षेत्र में रहने वाले चूहों की दिमागी कोशिकाएं (ब्रेन सेल्स) मरने लगीं और उनका व्यवहार आक्रामक हो गया। इनकी त्वचा में भी कई परिवर्तन दिखे। इसके निष्कर्ष में उन्होंने लिखा कि इंसान तेज असर वाले घरेलू कीटनाशकों से दूर रहें तो अच्छा। ऐसा ही एक अध्ययन 1980 के दशक में अमेरिका के एवरग्लैड पार्क इलाके में रहने वाले कर्मचारियों पर किया गया था। देखा गया कि मॉस्किटो रिप्लेंट का नियमित इस्तेमाल करने वाले लोगों को त्वचा में खुजली, आंखों में जलन, सुस्ती, होंठों पर खुश्की और सिरदर्द जैसी समस्याएं होने लगीं। इन अध्ययनों से सचेत अमेरिका, कनाडा और यूरोपीय संघ के देशों में मॉस्किटो रिप्लेंट से लेकर अन्य घरेलू कीटनाशकों में डाले जाने वाले रसायनों की मात्रा सख्ती से नियंत्रित की जाने लगी है। पर हमारे देश में फिलहाल ऐसा कोई मापदंड या कायदा–कानून नहीं है जो ऐसे खतरनाक रसायनों का तय मात्रा से ज्यादा इस्तेमाल करने वाली कंपनियों को दंडित करे या लोगों को इनके इस्तेमाल के प्रति सचेत करने वाली हिदायतों का भी उतने ही जोरशोर से प्रचार करने को बाध्यकारी बनाए जितने दावे ऐसे उत्पाद बनाने वाली कंपनियां मक्खी–मच्छर के खिलाफ उनके असर के बारे में करती हैं।

कीटनाशकों की इस घेराबंदी का दूसरा छोर खेतों में फल, सब्जियों और अनाजों को कीटों से बचाने वाले रसायनों के छिड़काव से जुड़ा है। जिस हरित क्रांति ने अनाज के लिए विदेशों पर हमारी निर्भरता खत्म की है, उसका विपरीत प्रभाव यह है कि हमारी जमीन कीटनाशकों के जहर में डूब चुकी है । हालात यह है कि फैक्ट्रियों और खेतों के जरिये हम तक आया यह विष हमारे डीएनए में घुस गया है और लगातार चेतावनियां आ रही हैं कि इनका असर भावी पीढ़ी को विकलांग बना सकता है। पिछले साल पंजाब से इस बारे में आई रिपोर्टें जमीन में घुलते जहर की स्थिति और उसके असर को साफ करती हैं। चंडीगढ़ की एक संस्था पीजीआईएमईआर दो साल तक पंजाब के 25 गांवों में किए सर्वेक्षण के आधार पर इस नतीजे पर पहुंची कि खेती में इस्तेमाल कीटनाशकों और खतरनाक औद्योगिक कचरे ने वहां के लोगों की सेहत का सत्यानाश कर डाला है। खून के नमूनों का निष्कर्ष बताता है कि 65 फीसद लोगों में जेनेटिक उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) की शुरुआत हो चुकी है। पंजाब के बारे में ऐसी खबरें और रिपोर्टें पहले भी आती रही हैं। केंद्रीय प्रदूषण निगरानी प्रयोगशाला के साथ सेंटर फॉर साइंस एंड इनवायरनमेंट (सीएसई) ने पंजाब के गांवों में रहने वाले तमाम किसानों के शरीर में कीटनाशक अवशेषों (रेसेड्यू) की भारी मात्रा पाई। विश्व स्वास्थ्य संगठन की फूड एंड एग्रीकल्चर इकाई ने मनुष्यों में कीटनाशकों की उपस्थिति के जो मानक तय किये हैं, सीएसई के मुताबिक उनके मुकाबले यह मौजूदगी 158 गुना ज्यादा थी। अमेरिका के सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन द्वारा 2003 में अमेरिकी किसानों में पाए गए पेस्टीसाइड्स रेसेड्यू के मुकाबले पंजाब के किसानों में इनकी मौजूदगी 15 से 605 गुना ज्यादा बताई गई।

कीटनाशकों का जानवरों पर हुए प्रयोग में पाया गया है कि इनसे मस्तिष्क का विकास प्रभावित होता है और दिमागी संरचना में विकार आ सकता है। यह कैंसर उत्पन्न करने, मस्तिष्क की कोशिकाओं की संख्या में गिरावट, डीएनए की सिंथेसिस प्रक्रिया की रफ्तार रोकने और बच्चों की सीखने, ध्यान की प्रक्रिया और व्यवहार पर सीधा असर डालते हैं। गर्भस्थ शिशु तक इससे प्रभावित हो सकता है।

कीटनाशकों का जानवरों पर हुए प्रयोग में पाया गया है कि इनसे मस्तिष्क का विकास प्रभावित होता है और दिमागी संरचना में विकार आ सकता है। यह कैंसर उत्पन्न करने, मस्तिष्क की कोशिकाओं की संख्या में गिरावट, डीएनए की सिंथेसिस प्रक्रिया की रफ्तार रोकने और बच्चों की सीखने, ध्यान की प्रक्रिया और व्यवहार पर सीधा असर डालते हैं। गर्भस्थ शिशु तक इससे प्रभावित हो सकता है। कीटनाशकों के बचे अवशेषों की अधिकतम सीमा यानी एम आर एल तय करना एक समाधान है। यह कीटनाशकों की बची हुई वह मात्रा है, जो उपचारित किए जाने के बाद भी दूध, सब्जियों, अनाज और मांस में बची रहती है। विशेषज्ञ कहते हैं कि अनाज और फल– सब्जियों में यह मात्रा इतनी ही रहे जितने से मनुष्यों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल

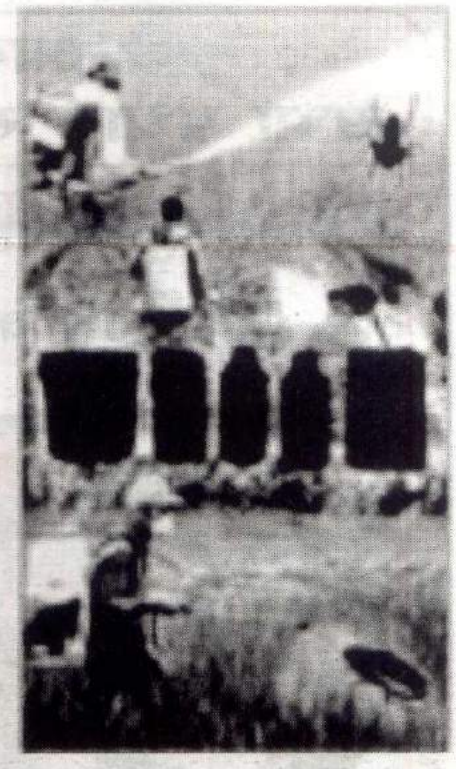

असर न पड़े। इसके लिए एक विदड्रा पीरियड तय होता है। जब तक यह समय यानी एमआरएल का वक्त बीत नहीं जाता है, तब तक किसी भी उत्पाद को मनुष्यों के इस्तेमाल में लाने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। इस तरह से एमआरएल कीटनाशकों के अंधाधुंध व गलत प्रयोग पर बंदिश लगाने वाली पहली शर्त है, लेकिन फसल को बाजार में ले जाने की जल्दी में क्या कोई इसका ध्यान रखता होगा?हमारे देश में तो यह तकरीबन नामुमकिन ही लगता है।

हालांकि एनआरएल के संबंध में गठित संयुक्त संसदीय पर खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों के अवशेषों आदि के बारे में मानक बनाने और उनका पालन कराने की जिम्मेदारी है पर किसानों को कोई जानकारी नहीं है कि किस फसल पर कितनी मात्रा में कीटनाशक का छिड़काव होना चाहिए। आढ़तिये भी फल–सब्जियों को संरक्षित करने के लिए कीटनाशकों का इस्तेमाल करते हैं। कुछ वर्ष पहले सरकार ने तय किया था कि पंजीकृत हर नए कीटनाशक को एमआरएल की शर्त पूरी करनी होगी, पर सरकार एमआरएल के मानक अब तक नहीं तय कर पाई है। पूर्व में बिहार में मिड–डे मील में ऑर्गेनो फॉस्फोरस की खतरनाक मात्रा के कारण 22 बच्चे मर चुके है, लेकिन कीटनाशकों के इस्तेमाल की मात्रा के बारे में अदालतें केंद्र व राज्य से जवाब–तलबी तक ही पहुंच पाई हैं।

सरकार द्वारा कीटनाशकों के संतुलित प्रयोग के संबंध में जरूरी इंतजाम न करने के पीछे हो न हो, सालाना 35 करोड़ डॉलर का कारोबार करने वाली कीटनाशक व रासायनिक खाद उत्पादन इंडस्ट्री का कोई दबाव हो।– **राष्ट्रीय सहारा से साभार**

डॉ. शिव कुमार शास्त्री

आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार) के बने प्रधान

आर्य समाज की जगत प्रसिद्ध संस्था आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) के वार्षिक निर्वाचन में डॉ. शिव कुमार शास्त्री 2019–2020 के लिए प्रधान निर्वाचित हुए हैं।

उल्लेखनीय हैं कि डॉ. शिव कुमार शास्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के वर्षों तक गरिमा मण्डित पदों को सुशोभित कर चुके हैं।

हम आशा करते हैं कि शास्त्री जी के नेतृत्व में आश्रम उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

– श्रीनिवास आर्य, मंत्री, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार)

प्रभु तुम हमारे पथ प्रदर्शक बनो!

— सुरेश चन्द्र वेदालंकार

भग एव भगवाँ अस्तु, देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तत्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो एग पुर एता भवेह।।

ऋ. 6/41/5

(भगवान एव) सब ऐश्वर्यों के अधिपति होने से ही वह प्रभु (भगः अस्तु) भग कहलाते हैं। (देवाः) हे महिमाशाली (श्याम) हों (भग) हे भग! (तं त्वा) उस तुम को (सर्व इत्) सभी (जोहवीति) आह्वान करते हैं (भग) हे भग! (स) वह तुम (इदं) इस संसार में (नः पुर एता भव) हमारे पथदर्शक नायक बनो।

संसार के दुखों को दूर करके उसे सुखधाम बनाने के यत्न में जीवन को होम कर देना ही जीवन का जीवनदर्शन होना चाहिए। मानवता की सेवा ही हमारा आदर्श है। मार्टिन लूथर के शब्दों में हम कह सकते हैं, मैंने अनुभव किया है कि प्रत्येक मनुष्य का जीवन उस परम पावन विराट् जीवन का प्रवेश द्वार है, जहां हमारे सन्तापों, अभावों और विकृतियों का अन्त है। इस देह के द्वार पर खड़े होकर मैंने स्वयं इस विराट जीवन को देखा है। मेरी सबसे प्रिय कामना यही है कि मेरे ही अन्य रूप जगत् किये कोटी-कोटी जीव भी अपनी देह में झांकें और आनन्द, सौन्दर्य, माधुर्य एवं अमरता के इस लोक के दर्शन करें।

वास्तव में यह जीवन दुःखमय नहीं- आनन्दमय है। संसार के दुखों को जब मनुष्य देखता है, तो वह उन्हें देखकर घबरा उठता है, चिन्तित हो जाता है, और संसार को वह दुःखमय अनुभव कर आत्म सन्तोष के लिए वैराग्य के नाम पर संसार से भाग खड़ा होता है। बौद्ध दर्शन के तीन मूल तत्व हैं सर्वदुःखम् दुःखम, सब कुछ दुख है, सर्व क्षणिक क्षणिकम् सब कुछ क्षणिक है और सर्वम् अनित्यम् सब कुछ अनित्य है। यह एक निराशावादी दर्शन है और इस दर्शन ने, अनजाने रूप में ही सही, भारतीय इतिहास पर अपना कुप्रभाव डाला है। वास्तव में यह संसार दुःखमय नहीं। परमेश्वर ने जीवात्मा को दुःख भोगने के लिए इस संसार में नहीं भेजा। वह तो आनन्द के लिए संसार में आया है। सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में स्वामी जी से प्रश्न पूछा गया जो संसार को परमेश्वर न बनाता तो आनन्द में बना रहता और जीवों को भी सुख दुःख प्राप्त न होता। इसका उत्तर देते हुए स्वामी जी ने लिखा है यह आलसी और दरिद्र लोगों की बाते हैं पुरुषार्थी की नहीं। और जीवों को प्रलय में क्या सुख और दुख है? जो सृष्टि के सुख दुःख की तुलना की जाये तो सुख कई गुणा अधिक होता है और बहुत से पवित्रात्मा जीव मुक्ति के साधन कर मोक्ष के आनन्द को भी प्राप्त होते हैं। उसका अनन्त सामर्थ्य, जगत् की उत्पति, स्थिति, प्रलय और धर्म देखना है वैसे परमेश्वर का स्वाभाविक गुण जगत् की उत्पत्ति करके सब जीवों को असंख्य पदार्थ देकर परोपकार करना है। इस प्रकार संसार दुःखमय नहीं अपितु संसार में सुख ही अधिक है। इस सुख की ओर बढ़ना ही इस सौन्दर्य की ओर बढ़ना ही जीवन का लक्ष्य है। कवि ने कहा है -

सुन्दर से नित सुन्दरतर, सुन्दरतर से सुन्दरतम्।
सुन्दर जीवन का क्रम रे, सुन्दर-सुन्दर जग जीवन।।

यह मानव जीवन सुन्दर आदर्शों और विश्वासों से ही सुखमय और सुन्दर बन सकता है।

सुन्दर विश्वासों से ही बनता रे सुखमय जीवन। इसलिए भगवान् के भग रूप की उपासिका वैदिक संस्कृति कहती है।

जीवन की लहर-लहर में, हंस खेल-खेल रे नाविक।
जीवन के अन्तरअतल में, नित बूड़-बूड़ रे नाविक।।

इसलिए जीवन में दुखों से घबराकर विरक्त, और उदासीन नहीं बनना चाहिए। जीवन तो आशा, उल्लास और आनन्द का सन्देश दे रहा है-

जग जीवन में उल्लास मुझे, नव आशा, नव-अभिलाष मुझे।

पर यह आनन्द कब मिलेगा? यह निराशा कब दूर होगी? दुःख और भय का कब अवसान होगा? जब हम प्रभु की शरण में जायेंगे। जब हमारे ऊपर दुःख और कष्ट आते हैं, हम उस आनन्दस्वरूप प्रभु को पुकारते हैं और वह हमारी सच्ची पुकार को सुनता है। हमारे कष्टों को दूर करता है। हर व्यक्ति अपने को किसी दूसरे के भरोसे छोड़ना चाहता है यह सृष्टि का विधान है। वह इस आश्रय के लिए अपने से महान् को खोजता है। बच्चा कितना निश्चिन्त है। उसका सारा बोझ माँ बाप ले लेते हैं। स्वामी रामतीर्थ अमरीका चल पड़े पास कुछ नहीं था। जब जहाज अमरीका के बन्दरगाह पर पहुँचा तब उनके साथ के यात्री ने पूछा कुछ पता ठिकाना है? कहाँ जाओगे? कहाँ रहोगे? रामतीर्थ ने उत्तर दिया भगवान भरोसे जा रहा हूँ। उस यात्री ने उनका सारा बोझ अपने ऊपर ले लिया। भगवान भी सर्वत्र सबका बोझ संभाले हुए हैं। पर हाँ, सच्चे दिल से उसके प्रति आत्मसमर्पण तो कीजिए। देखिए -

जब दाँत न थे तब दूध दियो, जब दूध दिया तब अन्न न देहैं। जल में। थल में पशु-पच्छिन की जो सुधि लेत सो तोको हू लै हैं।।

परन्तु यह प्रभु जब हममें तड़पन होती है, तब हमारे सहारे को पहुँच जाता है। पहुँचे क्यों नहीं वही हमारी माँ है। कहते हैं कि एक बच्चा गिर पड़ा। हाथ में कंकड़ चुभ गए। पास कुर्सी पड़ी थी। उसका सहारा लेकर उठने लगा, पर वह सरक गई। उसने मेज पकड़ी, मेज की टांग टूटी हुई थी। पास में परदा लटका हुआ था उसने परदा पकड़ना चाहा पर वह सड़ा गला था फट गया। अन्त में उसने माँ-माँ पुकारा। माता दूध गर्म कर रही थी। उसमें उबाल आ रहा था। उसे वैसे ही छोड़ कर आई और उसने बच्चे को उठा लिया। बच्चे ने कहा माँ तुम कितनी निष्ठुर हो, मैं कब से रो रहा था। तुम न आयीं। माँ ने कहा तुमने मुझे पुकारा कब? जब पुकारा तब आ गई। एक दिन बच्चा झूठ मूठ गिरा, माँ गिरा कहकर चिल्लाने लगा। माँ नहीं आई। बच्चे ने पूछा माँ आज क्यों नहीं आई? उसने कहा तेरी पुकार बनावटी थी। याद रखिए, जिसके दिल में तड़पन नहीं, भगवान के लिए सच्ची पुकार नहीं उसे भगवान् प्राप्त नहीं होते। गुरुदत्त और श्रद्धानन्द ने भगवान को पुकारा था भगवान उनकी मदद को आये। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द ने पुकारा उन्हें भगवान मिले। महात्मा गाँधी और स्वामी दयानन्द ने उन्हें पुकारा था भगवान उनकी मदद को आये। इसलिए परमात्मा का सहारा ही सर्वोत्तम सहारा है। प्रभु का आश्रय ही परमाश्रय है।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती ने अपनी पुस्तक में एक बड़ा सुन्दर दृष्टान्त इस विषय में दिया है। उन्होंने लिखा है यदि मनुष्य ईश्वर को सचमुच अपना बन्धु पिता और विधाता समझ ले तो उसे कष्ट नहीं हो सकता। फिर तो वह निर्भय और निःशंक हो जाता है।

एक समय की बात है कि एक जहाज समुद्र में जा रहा था कि भयंकर तूफान आने लगा और जहाज के डूबने का भय उत्पन्न हो गया। सभी व्यक्ति रोने और चिल्लाने लगे। परन्तु एक ईश्वर भक्त बिल्कुल निर्भय था, प्रफुल्लित था। साथ में उसका पुत्र था, जो जहाज के डूबने और मरने की चिन्ता से बहुत दुःखी होकर रोता और चिल्लाता था। पिता ने उसे बहुत समझाया, पर उसका रोना-धोना बन्द नहीं हुआ। तब पिता ने उसे फर्श पर पटक दिया और म्यान से तलवार निकाल कर तथा अत्यन्त क्रुद्ध होकर गर्दन पर रख दी और बोला कि यदि तूने रोना-चिल्लाना बन्द न किया तो तुम्हारी गर्दन अभी धड़ से पृथक कर दी जायेगी। पिता के इस कार्य से पुत्र का ध्यान तूफान से हट गया और उसका भय भी जाता रहा। वह खिलखिला कर हंसने लगा। पिता ने और भी क्रुद्ध होकर कहा मैं अभी तुम्हारी गर्दन धड़ से अलग करता हूँ। परन्तु पुत्र ने उत्तर दिया मुझे डर इसलिए नहीं लगता कि मैं जानता हूँ कि यह तलवार मेरे पिता के हाथ में है अतः मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह तलवार मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। तब पिता ने कहा इसी प्रकार मुझे दृढ़ विश्वास है कि तूफान और मृत्यु से मुझे कोई हानि नहीं पहुँच सकती। जब आप यह सोच लेंगे तब आपकी पुकार वह प्रभु अवश्य सुनेगा। आपका कल्याण होगा अकल्याण नहीं। तब आप स्वयं कहेंगे।

राजी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रजा है।
यहाँ यूँ भी वाह-वाह है, और त्यूं भी वाह-वाह है।

इस प्रकार यह आनन्द यह निर्भयता प्रभु की शरण में जाने से ही मिल सकती है। ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन अनादि और अनन्त सत्ताएँ हैं। इनमें से प्रकृति जड़ है, अचेतन है। आनन्दस्वरूप और सत् है। वह भग का आश्रयस्थल है। सुख का अधिष्ठान है। तीसरा जीवात्मा है। इसका लक्षण है इच्छाद्वेषप्रयत्न सुख दुःख दोनों होते हैं। वह सुख के लिए, आनन्द के लिए प्रयत्न करता है। प्रयत्न वह दो ही दिशाओं में कर सकता है। एक प्रकृति की ओर और दूसरा ईश्वर की ओर। प्रकृति की ओर जब वह जाता है तो क्योंकि प्रकृति में आनन्द नहीं, जीव को आनन्द की उपलब्धि नहीं होती। प्रकृति जड़ है। उसमें न सुख है, न दुःख है, न कष्ट है, न आनन्द है। आपको जिस प्रकार चावल की दुकान पर चावल मिलेगा, कपड़े की दुकान पर चावल नहीं मिलेगा। वैसे ही आनन्द निधान भगवान् से ही आनन्द की प्राप्ति हो सकेगी।

एक बार कौआ एक रोटी का टुकड़ा लेकर पेड़ की डाल पर बैठ गया। नीचे तालाब था। तालाब में रोटी की परछाई देखकर एक कुत्ता उस पर झपटा। रोटी पानी के हिलने से इधर-उधर होती रही और कुत्ता उसे पकड़ने की कोशिश करते-करते थक कर हार गया। उसकी मृत्यु हो गई। रोटी नहीं मिली। रोटी मिलती कैसे? वह तो ऊपर थी। रोटी के लिए कुत्ते को पानी में न जाकर ऊपर पेड़ पर चढ़ना चाहिए था। ठीक उसी प्रकार मनुष्य प्राकृतिक वस्तुओं और सुखों में आनन्द और सुख समझ कर उनके पीछे भागता है, पर उन वस्तुओं में सुख न होने से वह उसे मिलता नहीं। मनुष्य थक जाता है, हार जाता है और उनमें मर भी जाता है। पर उसे सुख और आनन्द नहीं मिल पाते। यह मन्त्र प्रातःकाल के समय आनन्द, सुख एवं ऐश्वर्य के अक्षय भंडार भगवान् का स्मरण करने उसका आह्वान करने, उससे आनन्द और ऐश्वर्य प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। यह भी बतलाता है कि जीवन में प्रभु ही हमारा सच्चा मार्गदर्शक हो सकता है। परमेश्वर हमें सदा उत्तम मार्ग दिखलाता है। हमारी आत्मा में बल भर देता है। हमें हमारी आत्मिक शक्ति का बोध करता है। और जीवन समर में संघर्ष की प्रेरणा देता है। जो व्यक्ति इस आत्मिक बल का, भगवान् के ऐश्वर्यों का, उसके विशाल धन-धान्य के भंडार का दर्शन कर लेता है, उसे फिर किसी वस्तु की कमी नहीं रहती और न किसी वस्तु का भय रहता है।

महात्मा गाँधी जब किसी मामले को लेकर बहुत व्यग्र होते थे, उन्हें मार्ग न सूझता था, तब वे अपने को उस भगवान् पर छोड़ देते थे। उस समय उन्हें आन्तरिक ध्वनि सुनाई देती थी। यह आवाज और कुछ नहीं एकमात्र प्रभु की प्रेरणा होती थी, और वह महात्मा गाँधी का मार्गदर्शक बनती थी।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में एक अद्भुत रहस्य बतलाया है। उसी क्षण मनुष्य कोई काम प्रारम्भ करता है। आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, लज्जा, शंका और अच्छे काम करने में अभय, निःशंकता आनन्द और उत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं, परमात्मा की ओर से है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं, परमात्मा की ओर से है। और वह जीवात्मा जब शुद्ध होकर परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है, उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं।

महर्षि ने स्पष्ट बतला दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा मार्ग दिखलाता है। परन्तु स्वार्थी सुनता हुआ भी नहीं सुनता और कुमार्ग पर चलने लगता है। फिर भी प्रभु आवाज देता है, क्या कर रहो हो, संभल जाओ! संभलो पतित न होओ, दुःख में न पड़ो, गिरो नहीं उठो। यह आवाज जो सुन लेता है, उसके अनुसार चल पड़ता है, वह कुकर्म से बच जाता है और फिसलकर गिर कर भी पुनः उठकर संभल कर सन्मार्ग पर चलने लगता है। कोई भी पग उठाने से पूर्व परमात्मा से पूछो करूँ कि न करूँ? अन्तरात्मा से जो ध्वनि उठे, उसे परमात्मा का मार्गदर्शन समझो, वही परमात्मा की आवाज है। यह आवाज हृदयाकाश में विद्यमान रहती है परमात्मा की आवाज है। यह आवाज हृदयप्रकाश में विद्यमान प्रभु का सन्देश है मार्गदर्शन है। आइए, हम प्रातःकाल भगवान् का स्मरण करें और ध्यान रखें।

1. जीवन एक मधुर गीत है, दर्द भरी कहानी नहीं। जीवन विजय है पराजय नहीं।

2. यदि आनन्द चाहते हो तो कष्टों और दुःखों का चिन्तन छोड़ दो। वैभव प्राप्त करना चाहते हो तो निर्धनता के विचारों को हृदय से निकाल दो।

3. भगवान् की शरण में जाने से सौन्दर्य रत्न प्राप्त होते हैं। यदि हम प्रभु की शरण में जायेंगे तो हमें उससे बल प्राप्त होगा और अपनी शक्ति पर विश्वास प्राप्त होने से उसके ऐश्वर्य हमें मिलेंगे।

4. आपके रोगों की चिकित्सा न डॉक्टर करता है न वैद्य और न हकीम। आपका सबसे बड़ा चिकित्सक भगवान् है। उसे याद करो।

5. जिस ईश्वर ने सारे संसार को पूर्णता प्रदान की है, उसके भंडार में तुम्हारे लिए भी सब कुछ है। वह असीम है। सीमा में बांधने वाले तो हम हैं। ईश्वर तो प्यासी आत्माओं के लिए अमृत बरसाता है। आइए, हम भी उसी का आह्वान करें। उसे ही अपना सहारा बनायें। अन्त में इस हिन्दीगान को गाकर उसकी महिमा सोचें।

भगवन् वैभव वाले देव! तुम हो पूर्ण दिव्यतम सुन्दर! महादेव 'भग' अनुकम्पा दो, भीख मांगने बालरूप धर। हम आए हैं पास तुम्हारे, छिपी हुई निधि दिखलाओ निधिखुले हाथ दो दान हमें प्रिय, हैं पुकारते तुम्हें सभी विधि इस संसार सरणि में वैभव आगे चलना रूपधार नव, बन जाना हे मृत्युंजय! यों पूरा हो जीवन अभिनय।

समर्पित कार्यकर्ता एवं आर्य समाज सागरपुर के संस्थापक सदस्य डॉ. दयानन्द आर्य जी का निधन

आर्य समाज सागरपुर के संस्थापक सदस्य एवं दिल्ली में आर्य समाज संगठन के स्तम्भ रहे डॉ. दयानन्द आर्य का दिनांक 10 मई, 2019 को अस्वस्थता के कारण निधन हो गया है। डॉ. दयानन्द जी कृषि मंत्रालय भारत सरकार में अधिकारी पद से सेवानिवृत्त होने के बाद दिल्ली में आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने में पूर्ण तन–मन–धन से लगे रहे। उन्होंने सार्वदेशिक सभा द्वारा समय–समय पर आयोजित सम्मेलनों अपनी आर्य समाज एवं स्वयं अपनी ओर से बढ़–चढ़कर योगदान दिया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके निधन पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि एक समर्पित प्रखर आर्य कार्यकर्ता का हम सबके बीच से चला जाना आर्य समाज संगठन की अपूर्णीय क्षति है। सार्वदेशिक सभा की ओर से मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करते हुए पारिवारिकजनों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आर्य समाज के महान त्यागी, तपस्वी, संन्यासी, युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 13 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर

दिनांक : 12 जून (बुधवार), 2019 को राष्ट्रीय युवा संकल्प समारोह

स्थान - स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, जिला-रोहतक, हरियाणा में आयोजित

अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनायें

विशेष नोट - इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग प्रशिक्षण समारोह का समापन एवं आर्य जगत् के दो विद्वानों, एक भजनोपदेशक, एक संन्यासी, चार युवक कार्यकर्ता एवं चार महिला कार्यकर्ताओं को स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान से सम्मानित किया जायेगा। सम्मानित किये जाने वाले महानुभावों को स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन की ओर से स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, शॉल एवं धनराशि प्रदान की जायेगी। स्वामी इन्द्रवेश जी ने जीवनभर आर्य जगत के संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों, पुरोहितों एवं कार्यकर्ताओं को सम्मान देने की परम्परा को न केवल प्रचलित किया बल्कि इसको अत्यन्त श्रद्धा और सम्मान के साथ आगे भी बढ़ाया। वे सदैव उपरोक्त विद्वत्जनों की प्रतिष्ठा एवं सम्मान के लिए आगे बढ़कर योगदान देते थे। उसी परम्परा का निर्वहन करते हुए उनकी स्मृति में प्रतिवर्ष यह सम्मान समारोह एवं युवक तथा युवतियों को आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक करके संकल्प दिलवाने के लिए संकल्प समारोह का भव्य आयोजन किया जाता है। आप सभी से प्रार्थना है कि आप भी इस अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी एवं आकर्षक कार्यक्रम के साक्षी बनें और स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को आर्य समाज एवं राष्ट्र की सेवा में लगाने का संकल्प लें।

- स्वामी आर्यवेश, अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन

नागदा मध्य प्रदेश में आर्य समाज की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या ने प्रभावशाली वेद कथा का वाचन कर रचा इतिहास

सत्य-सनातन वैदिक धर्म प्रचार समिति और आर्य समाज नागदा के तत्वावधान में आयोजित इस वेद कथा में हजारों श्रोताओं ने प्राप्त किया ज्ञान लाभ

इस भव्य आयोजन का संयोजन युवा आर्य नेता श्री कमल आर्य ने किया

नागदा, मध्य प्रदेश में पहली बार प्रभावशाली वेदकथा का आयोजन दिनांक 1 से 5 मई, 2019 तक किया गया। अत्यन्त आकर्षक और विद्वता से भरपूर इस वेद कथा का वाचन आर्य जगत् की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या ने किया। इस विशेष कथा का आयोजन सत्य-सनातन वैदिक धर्म प्रचार समिति और आर्य समाज नागदा के तत्वावधान में प्रसिद्ध सेवाराम जी की बावड़ी में किया गया।

इस अवसर पर सुश्री अंजलि आर्या ने अपने प्रभावशाली विद्वतापूर्ण तथा मधुर भजनों के माध्यम से दिल को छू लेने वाले विषयों को उठाकर श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। कथा के इस तारतम्य में अंजलि आर्या ने कहा कि आज हम बेटियों को बाहर से सजाने में व्यस्त हैं उनको फैसन के नाम पर छोटे-छोटे कपड़े, चेहरे पर अत्यधिक मेकअप लगा रहे हैं तथा फैशन को अंग का प्रदर्शन बना रखा है। उन्होंने कहा कि हमें हमारी बेटियों को प्रदर्शन नहीं प्रियदर्शन बनाना है। हमें हमारी बेटियों को रानी लक्ष्मीबाई, रानी चूड़ावति, रानी पद्मिनी बनाना है। बाहर की बजाय अन्दर से सजाना है। उन्होंने कहा कि हम लोगों को उनके गुणों को सजाना पड़ेगा, उनके संस्कारों को सजाना पड़ेगा, उनके आत्मविश्वास को सजाना पड़ेगा तब समाज में वह वातावरण बनेगा कि कोई बहशी दरिन्दा उनकी तरफ आंख उठाकर भी नहीं देख सकता। सुश्री अंजलि आर्या ने अपने महापुरुषों श्रीराम तथा श्रीकृष्ण के गुणों का बखान करते हुए कहा कि आज हमने ही अपने महापुरुषों को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ रखा है। उन्होंने कहा कि उट-पटांग भजनों के माध्यम से अपने महापुरुषों को बदनाम करने का कार्य किया है। विभिन्न प्रकार के भद्दे-भद्दे गाने हमने एक ऐसे महापुरुष के लिए बनाये जो एक महान योगी थे। हमने योगीराज को भोगीराज बनाकर रख दिया है। अंजलि आर्या ने कहा कि रासलीला के नाम पर श्रीकृष्ण के जीवन की उन घटनाओं को हम जनता के सामने परोसते हैं जिनका श्रीकृष्ण से दूर-दूर का वास्ता नहीं है। उन्होंने कहा कि हमलोगों को चिन्तन करना पड़ेगा कि हम अपने महापुरुषों के साथ क्या न्याय कर पा रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि अपने महापुरुषों को इस प्रकार से बदनाम न करो। भगवान श्रीकृष्ण भारत के रक्षक थे। उन्होंने हमेशा अन्याय से युद्ध लड़ा और न्याय का साथ दिया। सुश्री अंजलि आर्या ने भगवान राम और योगीराज श्रीकृष्ण के चरित्र को जीवन पर उतारने की अपील की।

सुश्री अंजलि आर्या ने अपने प्रभावशाली भजनोपदेश के माध्यम से वेदों के मंत्रों की विद्वतापूर्ण व्याख्या करते हुए कहा कि यदि समाज की सर्वतोमुखी उन्नति करना चाहते हो तो घर-घर में वेद का पाठ होना चाहिए। वेदों की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारकर हम आदर्श नागरिक बन सकते हैं। अपने समाज को उन्नत कर सकते हैं। व्यक्ति की उन्नति के समस्त सूत्र वेदों में मिलते हैं। आज देश में हो रहे भ्रष्टाचार, अन्याय और अनेक बुराईयों से बचने के लिए हमें वेदों की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारना होगा। सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा द्वारा ऋषियों के माध्यम से दिये गये ज्ञान को वेद कहा जाता है। विश्व की कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसका निदान वेदों से न प्राप्त हो। उन्होंने हजारों की संख्या में बैठे हुए श्रोताओं को प्रेरित किया कि वे अपने घर में वेदों को स्थान अवश्य दें और उसका नित्य प्रति पाठ करते हुए उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें।

कथा का वाचन प्रतिदिन दोपहर 1 से 5 बजे तक किया गया। इस अवसर पर इस भव्य कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री विजय पटेल, श्री रमेश चन्देल, श्री जगदीश पांचाल, श्री रवि पांचाल, श्री अग्निवेश पाण्डेय, श्री भगवती पांचाल, श्री भंवर लाल पांचाल, श्री यशवन्त आर्य, श्री नागूलाल आंजना, श्री महेश सोनी, श्री रामसिंह आंजना, श्री अजय कुशवाहा, राजा कर्नावट, श्री प्रकाश पोरवाल, श्री राकेश सलाड़िया आदि ने अथक परिश्रम किया।

इस अवसर पर अतिथियों के रूप में वरिष्ठ समाजसेवी गोविन्द मेहता, बद्रीलाल पोरवाल, डॉ. सुनील चौधरी, डॉ. जितेन्द्र पाल, समाजसेवी रविकांठेड़, मनोज राठी वारदान, कमल जैन, युवराज सिंह राणावत, विजय पोरवाल आदि के अतिरिक्त सामाजिक नारी संगठन पांचाल समाज महिला मंडल, सोनी समाज महिला मंडल, संस्था प्रणव, तुलसी तपोवन गौशाला समिति आदि ने पधारकर धर्मलाभ प्राप्त किया।

इस सम्पूर्ण समागम का संयोजन एवं आयोजन स्व. श्री सेवाराम पटेल के सुयोग्य सुपुत्र युवा आर्य नेता श्री कमल आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

संस्कारों के सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द

– डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी

वेद का धर्म

वेद का धर्म वैदिक धर्म है ज्ञान का धर्म है, सत्य का धर्म है, न्याय और प्रकाश का धर्म है। वह हिन्दू धर्म, पौराणिक धर्म, शैव-शाक्त कापालिक या वैष्णव धर्म नहीं है वह मानव-धर्म है। वेद का 'आर्य' शब्द जाति-वर्ण काल या देश का वाचक नहीं है, वह गुणवाचक है। स्वयं वेदों का 'विजानीहि आर्यान् ये च दस्यवः' (ऋग्वेद 1/51/8) मन्त्र बताता है कि वेद का 'आर्य, दस्यु = डाकू या लुटेरा = शोषक का विरोधी है। वेद की भाषा कभी किसी काल की जनभाषा नहीं रही। जनभाषा 'संस्कृत' रही है। संस्कृत की तरह अन्य सभी भाषाओं में वेद के शब्द हैं। वैदिक भाषा के नियम बहुत ही विस्तृत हैं और इसके शब्द भी यौगिक हैं। संस्कृत भाषा के नियमों में संकोच और शब्दों की प्रवृत्तिरूढ़ि होती गई है अन्य भाषाओं की तरह। आधुनिक भाषाशास्त्री भी भारोपीय भाषा परिवार का मूल वैदिक भाषा को मानते हैं। उनके भाषाविदों का यह सुझाव भी रहा है कि इन्डो-योरोपियन, इण्डो-जर्मनिक या इण्डो-हिट्टाइट के स्थान में इस भाषा परिवार का नाम आर्य परिवार रखा जाए। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ. उदयनारायण तिवारी का कहना था कि स्वामी जी का 'आर्य भाषा' नाम रखना बहुत बड़े अर्थ गाम्भीर्य और दूरदृष्टि का सूचक था। वेद का परमेश्वरीय नाम 'ओ३म्', धार्मिक कृत्य 'यज्ञ', अभिवादन 'नमस्ते' और श्रेष्ठ सज्जन का नाम 'आर्य' इन शब्दों में व्यापक दृष्टि, अर्थ विशदता, सर्वजन ग्राह्यता और असाम्प्रदायिकता है। इनकी तुलना इसके समानार्थी अन्य किसी शब्द से नहीं की जा सकती।

ऋषि और वेद का अर्थ

यह अच्छी तरह सबको ज्ञात है कि वेदों का सम्बन्ध, द्रष्टृत्व ऋषियों से है – 'साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवः'। अतः वेदों का मर्म या अर्थ ऋषि दृष्टि से ही उद्घाटित होता है। वैदिक ऋषि मधुच्छन्दा, वशिष्ठ, वामदेव, ऋषिकाएँ अपाला घोषा, रोमशा से लेकर परवर्ती ऋषि ऐतरेय, याज्ञवल्क्य, गोपथ, मनु, यास्क पाणिनी और पतञ्जलि तक सभी ऋषियों की वैदिक मान्यताएँ तक है। उसमें कोई मत वैभिन्य नहीं है। वेदों के शब्द यौगिक हैं, उनमें लौकिक इतिहास नहीं हैं, वे सभी सत्य विद्याओं के मूल हैं, धर्म-अर्थ-काम त्रिवर्ग के साधक सभी शास्त्रों के वे उत्स हैं स्त्रोत हैं। व्याकरण, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा, वैशेषिक और वेदान्त, औपनिषदिक ब्रह्मविद्या, प्राणविद्या, यज्ञीय कर्मकाण्ड, आयुर्वेद, धनुर्वेद, अर्थवेद तथा गान्धर्ववेद और विविध विद्याओं गणित, राजनीति, सैन्य संचालन, कृषि, व्यापार, भूगर्भ, वनस्पति एवं जन्तु विज्ञान प्रभृति शाखाओं का विस्तार वैदिक ऋचाओं की प्रेरणा से हुआ है। उनमें विद्या, युक्ति, तर्क और विज्ञान के विरुद्ध कुछ भी नहीं है। ऋषियों की यही दृष्टि दयानन्द को भी मान्य है। दुःख है कि वेदार्थ की यह प्राचीन दृष्टि से मेल नहीं खाते। अतः ऋषि दयानन्द उन्हें चुनौती देते हैं। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द यास्क से सहमत हैं सायण और महीधर से नहीं। पाणिनि से सहमत हैं भट्टोजीदीक्षित से नहीं। मनु से सहमत हैं 'कुल्लूक भट्ट' से नहीं। व्यास और जैमिनि से सहमत हैं, शंकराचार्य और शबरस्वामी से नहीं। क्योंकि मूलसूत्रकार ऋषियों के ग्रन्थों के व्याख्याकार आचार्यगण बहुधा मूल पथ से भटककर सम्प्रदाय का प्रवर्तन कर देते हैं।

ऋषियों के प्रतिनिधि – 'दयानन्द'

स्वामी दयानन्द जिस धर्म के प्रचारक हैं उपदेष्टा हैं, वह वेद का धर्म और ऋषियों का धर्म है। आज का हिन्दू धर्म या पौराणिक धर्म, जिसे सनातन धर्म भी कहा जाता है, दुर्भाग्य से प्राचीन (पुराण का यौगिक अर्थ) या शाश्वत ('सनातन' शब्द का अर्थ) सिद्धान्तों का पोषक नहीं रह गया है। उदाहरण के लिए हिन्दुओं में प्रचलित कर्मकाण्ड पर दृष्टिपात कीजिए।

सन्ध्यादि नित्यकर्म में ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः (नित्यकर्म पूजा प्रकाश, पृ. 18 गीता प्रेस गोरखपुर, दशम संस्करण, 2053 वि. सं.) ये तीन लौकिक संस्कृत वाक्य बोलकर आचमन किया जाता है। जबकि स्वामी दयानन्द जी ने 'शन्नो देवीरभिष्टय' (यजुर्वेद 36/12) तथा 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' प्रभृति (आश्वलायन गृहयसूत्र 1/24/12, 21, 22) तीन मंत्रों से क्रमशः सन्ध्या और अग्निहोत्र में 'आचमन' का विधान किया है। वेदों में भी उच्चावचता की मान्यता के कारण दैनिक संध्या में पौराणिक लोग अथर्ववेद का मन्त्र नहीं बोलते। सन्ध्या में 'अघमर्षण' तथा 'उपस्थान' के मन्त्रों (पूर्वकाल से प्रचलित विधि) को यथावत् स्वीकार करते हुए स्वामी जी ने 'मनसा परिक्रमा' के लिए अथर्ववेद के प्राची दिग् (अथर्व. 3/27/1-6) प्रभृति 6 मन्त्रों का भी विनियोग किया है। ऋषि दयानन्द प्रवर्ति संस्कार की विधि या कर्मकाण्ड में सभी वेदों के साथ-साथ ऋषियों के गृहयसूत्र, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक तथा श्रोतसूत्रों की भी आवश्यक मान्यतायें संगृहीत हैं। संध्या, अग्निहोत्र और संस्कार की पद्धतियों में ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त अन्य किसी आचार्य का ग्रन्थ इतना व्यापक नहीं है, जिसमें पूर्व ऋषियों के प्रमाणों का अधिकाधिक ग्रहण करके उसमें सामंजस्य बिठाने का प्रयत्न किया गया हो। दयानन्द से पूर्व संस्कारों की परम्परा द्विजों से संकुचित होकर ब्राह्मण परिवारों तक सीमित हो गई थी। ब्राह्मण भी अपनी-अपनी वेद शाखा के गृह्यसूत्र के अनुसार संस्कार सम्पन्न करा लेते हैं। स्वामी जी ने इस परम्परा को तोड़कर जन साधारण में संस्कारों का प्रचलन कराने के लिए चारों वेदों के गृह्यसूत्र के अनुसार (ऋग्वेद का आश्वलायन, यजुर्वेद का पारस्कर, सामवेद का गोभिल तथा अथर्ववेद का शौनक) सम्यक् रूप से आर्ष संस्कार पद्धति प्रस्तुत की। इस प्रकार स्वामी जी सभी ऋषियों और चारों वेदों के प्रशंसक हैं और प्रतिनिधि प्रवक्ता भी। उन्होंने कोई नवीन मत-मतान्तर की स्थापना नहीं की है। उनका संदेश वेदों का संदेश है, ऋषियों का संदेश है, संसार के सभी मनीषियों के संदेशों का सार है।

संस्कार विधि का वैशिष्ट्य

स्वामी दयानन्द को 'संस्कार विधि' के निर्माण करने की क्यों आवश्यकता पड़ी? इसका स्थूल रूप से यही उत्तर है कि आर्य जाति में वेदादिशास्त्र विहित संस्कारों का अभाव देख, ऋषि ने करुणामय मन से इस अधःपतित जाति के पुनरुत्थानार्थ इस ग्रन्थ को लिखा। महर्षि दयानन्द से पूर्व आर्य लोगों में केवल थोड़े से ही संस्कारों का लुप्तप्राय रूप से प्रचार था। 'गर्भाधान' और 'पुंसवन' तो लोगों के लिए स्वप्न हो चुका था। 'सीमन्तोन्नयन' संस्कार का प्रचार केवल स्त्रियों के विधि द्वारा ही प्रचलित था जहाँ तक कि बिना मन्त्रादि के स्त्रियाँ स्वयं कुछ एक फल या मिठाई आदि लेकर गर्भिणी की झोली में डाल देती थीं। 'जातकर्म' का विचार ही न था। स्व-जातियों को बुलाकर लोग स्वयं नाम रखकर 'नामकरण' संस्कार की पूर्ति कर दिया करते थे। 'निष्क्रमन' और अन्नप्राशन' तो किसी को स्मरण भी न था। 'मुण्डन संस्कार' अपूर्ण और अवैदिक रीति से प्रचलित था। 'कर्णवेध' स्त्रियाँ स्वयं या किसी यवन (=मुसलमान) से करा लेती थीं। 'उपनयन' भी अपूर्ण रीति से असमय पर होता था। कुछ लोग तो विवाह-कार्य प्रारम्भ होने पर विवाह-स्नान के समय में यज्ञोपवीत धारण करते-थे। कई एक देवी मन्दिरों में देवी-देवताओं के चरणों से यज्ञोपवीत का स्पर्श करके, बिना मन्त्र ही अपनी सन्तान का यज्ञोपवीत करते थे।

उपनयन का फल ब्रह्मचर्य धारण पूर्वक 'वेदारम्भ' का तो किसी को पता भी न था, फिर 'समावर्तन' के लिए क्या कहा जाये? केवल एक विवाह संस्कार को ही सब संस्कारों से अधिक प्रधानता दी जाती थी। वहां भी वाह्य आडम्बर बहुत और विधि का विचार बहुत थोड़ा था। उसमें भी शास्त्र विरुद्ध इतनी कुरीतियाँ थीं कि जिनका पूर्ण रूप से वर्णन किया जाये

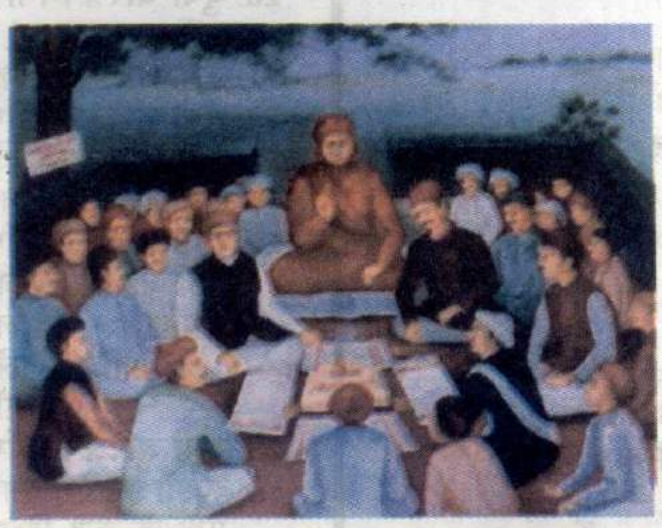

तो एक भिन्न शास्त्र बन जाए। उन नाम मात्र के संस्कारों में भी ब्राह्मणों ने नवग्रह-पूजन, गणेश-पूजनादि अनेक प्रकार की अवैदिक और अनार्ष विधियाँ चलाई हुई थीं। वेदों में इन ग्रहों की पूजा और गणेशादि की पूजा का वर्णन तो होना ही कहां था, पर आश्चर्य तो यह है कि इनका मूल पारस्कर, आश्वलायन, गोभिलादि प्रसिद्ध गृह्यसूत्रों में भी कहीं नहीं मिलता, जो कि संस्कारों के मूल ग्रन्थ हैं, और जिनकी सत्ता से ही संस्कारों की सत्ता है। न जाने फिर इन पौराणिक लोगों ने इस प्रकार की कल्पित बातों का प्रक्षेप इन पवित्र संस्कारों में क्यों किया?

इन 'संस्कार विधि' ग्रन्थ को पहले महर्षि ने वि. सं. 1932 में लिखा था। फिर 8 वर्ष के अनन्तर आषाढ़ मास वि. सं. 1940 में इस ग्रन्थ का परिमार्जित रूप से शोधन कर द्वितीय संस्करण छपवाया।

अपनी संस्कार विधि के प्रारम्भ में ही महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि –

वेदादिशास्त्रसिद्धान्तमाध्याय परमादरात्।
आर्योह्यिं पुरस्कृत्य शरीरात्मविशुद्धये॥

(संस्कार विधि पृ.-3)

अर्थात् वेदादिशास्त्रों का परमादर से चिन्तन करके आर्यों के इतिहासानुकूल शरीर और आत्मा की शुद्धि के लिए (यह ग्रन्थ रचा है)। 'उपदेश-मंजरी' की व्याख्यान माला में सातवें व्याख्यान, जो स्वामी जी ने जुलाई, 1876 ई. में पूना नगर में दिया था, उसमें 'कर्णवेध' संस्कार का वर्णन नहीं है। वहाँ उन्होंने गृहाश्रम को भिन्न लिखकर संस्कारों की गणना 16 षोडश की है। प्रथम 'संस्कार विधि' जो 1933 वि. सं. में प्रकाशित हुई थी, उसमें 'कर्णवेध' का वर्णन तो मिलता है, परन्तु वहाँ स्वामी जी ने 'वानप्रस्थाश्रम संस्कार' को भिन्न न मानकर उसे 'संन्यास' के अन्तर्गत माना है।

इन दो परस्पर विरुद्ध बातों का यह उत्तर है कि पहले 1875 ई. में स्वामी जी ने 'कर्णवेध' को बहुत उपयोग न समझा था। क्योंकि इसका वर्णन पारस्कर गृह्यसूत्र के कात्यायन परिशिष्ट भाग को छोड़कर अन्य किसी आज तक प्रकाशित गृह्यसूत्र में नहीं मिलता। प्रतीत होता है कि यह बात अनुभव कर उन्होंने इस संस्कार को प्रमुखता नहीं दी थी। यह भी सम्भव है कि इस संस्कार का वर्णन उन्होंने अपने व्याख्यान में किया हो और इसे 'चूड़ाकर्म-संस्कार' के अन्तर्गत कहा हो, परन्तु नोट करने वाले महाशय ने यह नोट न किया हो। यह भी सम्भव है कि नोट करके भी 'उपदेश मंजरी' में प्रकाशित न किया हो। क्योंकि उसमें व्याख्यानों को संक्षेप रूप में दिया है, विस्तार रूप से नहीं।

कैसे भी हो, यह बात तो सिद्ध ही है कि उस समय में स्वामी जी इस संस्कार को नहीं मानते थे।

इन पूना व्याख्यानों के तीन माह बाद अक्टूबर, 1875 में जब स्वामी जी ने संस्कार विधि का प्रथम संस्करण निकाला तो देश में प्रायः सर्वत्र 'कर्णवेध' का प्रचार देख, शास्त्रानुकूल होने से उन्होंने संस्कारमाला में इसे भी स्वीकार किया।

वानप्रस्थाश्रम का भी संन्यासाश्रम में बहुत भेद न जानकर आचार्य दयानन्द ने प्रथम संस्करण में इसे संन्यास के अन्तर्गत माना और गृहाश्रम को मुख्य समझा। परन्तु 1940 वि. सं. (1883 ई.) में जब 8 वर्ष पीछे ऋषि ने 'संस्कार विधि' का द्वितीय संस्करण निकाला, तो उसमें 'कर्णवेध' और 'वानप्रस्थाश्रम' को गृहाश्रम की अपेक्षा अधिक उपयोगी जान भिन्न-भिन्न लिखा।

संस्कार तो स्वामी जी को छोटे-बड़े सदा ही अभिमत थे, किन्तु उनकी मुख्यता और गौणता वे देशानुकूल करते थे। पहिले 1875 ई. के जुलाई मास में कर्णवेध को साधारण जानते थे। अनेक देशों में भ्रमण करते-करते आर्य जाति के प्रत्येक प्रान्तीय द्विजों की रीतियों का पूर्णरूप से अनुभव प्राप्त करके आठ वर्ष पीछे 1940 वि. सं. में जब उन्होंने संस्कार विधि का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया तो 'कर्णवेध' और 'वानप्रस्थ' को बहुपयोगी जान उन्हें गृहाश्रम की अपेक्षा विशेषता दी। 'संस्कार विधि' के प्रथम संस्करण में वर्णित गृहाश्रम को द्वितीय संस्करण में विवाह संस्कार के अन्तर्गत किया और संन्यासान्तर्गत वानप्रस्थ को भिन्न लिखा।

संस्कार विधि के द्वितीय संस्करण में जो न्यूनता वा अधिकता हुई है, उसके लिए स्वामी जी महाराज के ही लेख को उद्धृत करते हैं, जो उन्होंने द्वितीय संस्करण की भूमिका में दिया है –

"जो विषय प्रथम अधिक लिखा था उसमें अत्यन्त उपयोगी न जानकर छोड़ भी दिया है। और अब की बार जो-जो अत्यन्त उपयोगी विषय हैं, वह-वह अधिक भी लिखा है। इसमें यह न समझ जावें कि प्रथम युक्त न था, और प्रथम युक्त छूट गया, उसका संशोधन किया है।"

स्वामी जी के इन वाक्यों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्होंने युक्त विषय को छोड़ा नहीं, प्रत्युत द्वितीय संस्करण में संशोधन किया है। ऐसे ही यदि उन्होंने गृहाश्रम को विवाहान्तर्गत और वानप्रस्थ को संन्यासान्तर्गत न मानकर, प्रत्युत उसे स्वतंत्र मानकर द्वितीय संस्करण में यह संशोधन किया तो कोई दोष की बात नहीं।

मनु महाराज यदि पुंसवन, सीमन्तोन्नयन और कर्णवेध संस्कारों का वर्णन स्व मनुस्मृति में नहीं करते तो इसमें मनु महर्षि का अपमान नहीं किन्तु उन्होंने अपने विचारानुकूल विशेषता नहीं दी और उधर अन्य गृह्यसूत्र कर्ता ऋषि इन्हें सर्वत्र ही स्व-सूत्र ग्रन्थों में विशेषता देते हैं। वे वानप्रस्थ और संन्यास संस्कार का वर्णन नहीं करते। आश्वलायन के अतिरिक्त अन्य ग्रह्यसूत्रकर्ता ऋषियों ने अन्त्येष्टि संकार का वर्णन नहीं किया है इससे हम ये नहीं कह सकते हैं कि इसमें ग्रह्यसूत्रकर्ताओं की त्रुटि हैं इसका समन्वय यही है कि उन महापुरुषों ने अपने-अपने समय में देश कालानुकूल वेदमूल को लेकर संस्कारों का विधान किया। जैसे प्राचीन काल में ऋषियों ने विधियाँ लिखीं, वैसे ही उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े धर्मसंशोधक वेदत्त्वज्ञाता स्वामी दयानन्द ने भी देश कालानुकूल जिस-जिस संस्कार की बहुत विशेषता अनुभव की उसे मुख्य और अन्य साधारण संस्कारों को गौण समझकर उन्हें मुख्य संस्कारों के अन्तर्गत किया।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती की रचनाओं में 'संस्कार-विधि' का प्रमुख स्थान ह। उनके महत्त्वपूर्ण तीन ग्रन्थ 1. संस्कार विधि, 2. सत्यार्थ प्रकाश, 3. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका हैं।

प्राचीन ऋषियों ने मनुष्य जन्म को सुसंस्कृत बनाने के लिए बहुविध संस्कारों की योजना की है। मनुस्मृति में गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त चौदह संस्कारां का उल्लेख है। अन्य गृह्यसूत्रों में भी अनेकविध संस्कारों का वर्णन मिलता है। संक्षेप में उन गृह्यसूत्रों के अनुसार संस्कारों की संख्या इस प्रकार है :-

आश्वलायन गृह्यसूत्र	13 तरह
कौषीतकि (शांखायन) गृह्यसूत्र	12 बारह
पारस्कर गृह्यसूत्र	14 चौदह
आपस्तम्ब गृह्यसूत्र	12 बारह
हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र	10 दस
मानव गृह्यसूत्र	13 तेरह
गोभिल गृह्यसूत्र	12 बारह
जैमिनि गृह्यसूत्र	11 ग्यारह

शेष पृष्ठ 7 पर

ग्रीष्म कालीन छुट्टियों में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित आर्य युवा निर्माण शिविरों का विवरण

1. **राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता कैप्सूल शिविर**
   दिनांक 20 से 28 जून, 2019
2. **प्रान्तीय युवा चरित्र निर्माण शिविर, हरियाणा**
   दिनांक 1 से 5 जून, 2019
   स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली
   संयोजक– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, मो.–9354840454
3. **राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर**
   दिनांक 6 से 12 जून, 2019
   स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली
   संयोजक – प्रवेश आर्या, मो.:–9416630916
4. **कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर**
   10 से 16 मई, 2019
   स्थान–श्री विनायक शोध व प्रशिक्षण संस्थान,
   नायला, जयपुर, राजस्थान
   संयोजक– श्री यशपाल 'यश', मो.–9414360248
5. **आर्य युवा निर्माण शिविर जयपुर**
   14 से 20 जून, 2019 तक
   स्थान–संस्कार भवन, जी. एल. सैनी कालेज
   केसरनगर चौराहा, रामपुरा रोड, जयपुर
   संयोजक– श्री यशपाल 'यश', मो.–9414360248
6. **आर्य युवा निर्माण शिविर पलवल**
   आर्य समाज जवाहरनगर, पलवल, हरियाणा
   संयोजक–स्वामी श्रद्धानन्द, मो.–9416267482
7. **आर्य कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर**
   22 से 28 मई, 2019
   आर्य कन्या पाठशाला, खुर्जा, बुलन्दशहर, उ. प्र.
8. **आर्य युवा निर्माण शिविर मध्य प्रदेश**
   29 मई से 2 जून, 2019
   स्थान–सिहोर, मध्य प्रदेश
   सम्पर्क–डॉ. लक्ष्मणदास आर्य, मो.–9425133481
9. **आर्य युवा निर्माण एवं बौद्धिक शिविर चम्बा**
   2 से 5 मई, 2019
   स्थान–दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल प्रदेश
10. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ जाजवान, जिला जींद
    20 मई से 26 मई 2019
    संयोजकः– राजपाल आर्य
11. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    आर्य स्कूल, गंगाना, सोनीपत
    22 से 29 मई 2019
    संयोजकः– बलराम आर्य
12. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
    बिसवां मील, सोनीपत
    23 से 30 मई 2019
    संयोजकः– आचार्य प्रवीण आर्य
13. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सोनीपत
    7 से 13 जून 2019
    संयोजकः– अंकित आर्य
14. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    एम डी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, राजौंद,कैथल
    22 से 28 मई 2019
    संयोजकः– डॉ होशियार सिंह आर्य
15. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    जाट स्कूल, कैथल
    25 से 30 मई 2019
    संयोजकः– सत्यवीर आर्य
16. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ मांडौली खुर्द, जिला भिवानी
    21 से 27 मई 2019
    संयोजकः– अशोक आर्य
17. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ मांडौली कलां, जिला भिवानी
    21 से 27 मई 2019
    संयोजकः– अशोक आर्य
18. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ चहड़ कलां, जिला भिवानी
    25 से 31 मई 2019
    संयोजकः– अशोक आर्य

11 जून से 19 जून 2019 के मध्य भिवानी जिले में आयोजित होने वाले शिविर

19. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ बहल, जिला भिवानी
    संयोजकः– अशोक आर्य
20. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ सुरपुरा कलां, जिला भिवानी
    संयोजकः– अशोक आर्य
21. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ गौकुलपुरा, जिला भिवानी
    संयोजकः– अशोक आर्य
22. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ जुई कलां, जिला भिवानी
    संयोजकः– बाबू लाल आर्य

जींद जिले में 6 जून 19 जून के मध्य आयोजित होने वाले शिविर

23. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    स्वामी इन्द्रवेश व्यायामशाला
    गावँ खटकड़, जिला जींद
    संयोजकः– अशोक आर्य, सोनू आर्य
24. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ गोइयाँ, जिला जींद
    संयोजकः– धर्मबीर आर्य सरपंच
25. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ चांदपुर, जिला जींद
    संयोजकः– मनीष नरवाल
26. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ छातर जिला जींद
    संयोजकः– सूरजमल आर्य पहलवान
27. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ घोघड़ियाँ, जिला जींद
    संयोजकः– जगफुल ढिल्लों
28. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ बहलबा, जिला रोहतक
    संयोजकः डॉ सीसराम आर्य
29. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ फरमाना, जिला रोहतक
    संयोजकः डॉ राजेश आर्य
30. **राष्ट्रीय युवा संकल्प समारोह**
    (युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी की 13वीं पुण्य स्मृति के अवसर पर)
    12 जून, 2019, प्रातः 9 बजे से मध्यान्ह 2 बजे तक
    स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली

!!ओ३म्!!

आर्य राष्ट्र बनायेंगे! युवक क्रांति अभियान

युवकों के लिए स्वर्णिम अवसर

हरियाणा प्रान्तीय आर्य युवक निर्माण शिविर

स्वामी दयानन्द सरस्वती

दिनांक : 1 जून (शनिवार) से 5 जून (बुधवार), 2019 तक
स्थानःस्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, ग्राम टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)

स्वामी इन्द्रवेश

नौजवान साथियों तैयार हो जाओ

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्त्व कला एवं आत्मविश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, धार्मिक अन्धविश्वास व पाखण्ड एवं दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- शिविरार्थियों की आयु 15 वर्ष से ऊपर होनी चाहिए।
- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाईल अपने साथ लेकर न आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, गणवेश (सफेद सैंडो बनियान, सफेद जूते, सफेद जुराब व लाल रंग का नेकर) व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक युवक 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र, अपने माता-पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई, 2019 तक अवश्य जमा करवायें। स्थान सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस पांच दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं, आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग करायें। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट 'युवा निर्माण अभियान' के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइंड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से युवक चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक (हरियाणा), मो.:- 9416630916, 9354840454

पृष्ठ 5 का शेष

संस्कारों के सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द

कौशिक गृह्यसूत्र	10 दस
गोपथ ब्राह्मण	11 ग्यारह
मनुस्मृति	14 चौदह

किसी गृह्यसूत्रकार ने वानप्रस्थ तथा संन्यास का उल्लेख नहीं किया। इसका कारण यह है कि ये गृह्यसूत्र गृहस्थ सम्बन्धी कर्त्तव्यों का वर्णन करते हैं अन्यों का नहीं। वानप्रस्थ और संन्यास का गृह कर्मों से कोई सम्बन्ध नहीं, अतः इनका विधान गृह्यसूत्रों में नहीं मिलता। इन दोनों संस्कारों का विशेष वर्णन ब्राह्मण और स्मृतियों में आता है, और स्वामी जी ने यह संस्कार उन्हीं के आश्रय से लिखे हैं। आश्वलायन और कौशिक गृह्यसूत्र के अतिरिक्त किसी गृह्यसूत्र में अन्त्येष्टि का वर्णन नहीं है, किन्तु यजुर्वेद तथा मनुस्मृति में अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन है। स्वामी दयानन्द की मान्यताओं में वेद तथा मनुस्मृति प्रतिपादित सिद्धान्तों का प्राधान्य है। अतः स्वामी जी ने अपनी 'संस्कार-विधि' में सोलहवें संस्कार के रूप में अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन किया है। आश्वलायन गृह्यसूत्र तथा कौषीतकि में -

1. निष्क्रमण, 2. कर्णवेध, 3. वानप्रस्थ तथा 4. संन्यास का उल्लेख नहीं है। इसी प्रकार गृह्यसूत्र में 'गर्भरक्षण' नाम का संस्कार अधिक लिखा है। जिसे पुंसवन के बाद चतुर्थ मास में कराने का विधान हैं इस गृह्यसूत्र के अतिरिक्त किसी अन्य गृह्यसूत्र में यह संस्कार नहीं मिलता। पारस्कर गृह्यसूत्र में वानप्रस्थ संन्यास और अन्त्येष्टि का वर्णन नहीं है। इसी प्रकार उपरिलिखित गृह्यसूत्रों में किसी में 12 बारह, किसी में 10 दस, किसी में 13 तेरह, 14 चौदह संस्कारों का उल्लेख मिलता है। अधिक से अधिक 48 संस्कारों का उल्लेख भी कुछ गृह्यसूत्रों तथा निबन्धों में है। परन्तु स्वामी जी मुख्य रूप से 16 सोलह संस्कारों का उल्लेख उसकी उपयोगिता और उसकी विस्तृत विधि का वर्णन संस्कार विधि में करते हैं। स्वामी जी द्वारा अभिमत 16 संस्कार निम्न हैं -

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकर्म, 9. कर्णवेध, 10. उपनयन, 11. वेदारम्भ, 12. समावर्तन, 13. विवाह, 14. वानप्रस्थ, 15. संन्यास, 16. अन्त्येष्टि।

ऋषि दयानन्द ने विभिन्न गृह्यसूत्रों तथा मनुस्मृति के आधार पर अत्यन्त उपयोगी 16 (सोलह) संस्कारों के क्रियाकलाप का वर्णन अपने 'संस्कार विधि' संज्ञक ग्रन्थ में किया है। संस्कार विधि की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं :-

1. चारों वेदों में मंत्रों, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यक, उपनिषद्, गृह्यसूत्र तथा मनुस्मृति के प्रमाणों से संकलित हैं गृह्यसूत्रों के अतिरिक्त वेद तथा मनुस्मृति के प्रमाण अधिक संख्या में दिए गए हैं।

2. प्रत्येक गृह्यसूत्र किसी न किसी वेद से सम्बद्ध है। स्वामी जी ने चारों वेदों से सम्बद्ध मुख्य गृह्यसूत्रों का उपयोग 'संस्कार विधि' में किया है, इससे 'संस्कार विधि' संस्कारों का एक समग्र ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध हो गया। स्वामी जी ने चारों वेदों से सम्बद्ध जिन गृह्यसूत्रों का उपयोग 'संस्कार विधि' में किए हैं उसका उल्लेख इस प्रकार है -

1. ऋग्वेद का आश्वलायन गृह्यसूत्र, 2. यजुर्वेद का पारस्कर गृह्यसूत्र, 3. सामवेद का गोभिल गृह्यसूत्र तथा मन्त्रब्राह्मण एवं 4. अथर्ववेद का शौनक गृह्यसूत्र।

इसका परिणाम यह हुआ कि चारों वेदों के गृह्यसूत्रों के अनुसार संस्कार करने-कराने वालों के लिए यह एक उपयोगी ग्रन्थ बन गया।

3. संस्कारों की कतिपय विधियों में मांसभक्षण का विधान गृह्यसूत्रों में मिलता हैं विशेषकर मधुपर्क के निर्माण में तथा अन्नप्राशन में। किन्तु स्वामी दयानन्द ने स्वरचित 'संस्कार विधि' में मांस, मछली तथा सुरा को कहीं किसी रूप में स्थान नहीं दिया।

4. गृह्यसूत्रों में संस्कार का पात्र मुख्यतः ब्राह्मण या द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को माना गया है। स्वामी जी संस्कारों का पात्र मानव मात्र को मानते हैं। संस्कार श्रद्धा और भक्ति पूर्वक कोई कर सकता है। स्वामी जी के अनुसार संस्कारों को करने वाला द्विज है और द्विजत्व का निर्धारण गुण, कर्म तथा स्वभाव के आधार पर शूद्र कुलोत्पन्न बालक को संस्कार के अयोग्य नहीं माना जा सकता।

5. गृह्यसूत्रों में स्त्री या नारी वर्ग के प्रति अत्यन्त ही भेदभाव मिलता है। मनुस्मृति और अनेक गृह्यसूत्र अनेक संस्कारों के लिए स्त्री को अधिकारी ही नहीं मानते हैं। संस्कारों की अनेक विधियाँ स्त्रियों के लिए विहित नहीं हैं या उन विधानों को स्त्री (बालिका) के संदर्भ में मन्त्रपाठरहित मौन होकर सम्पन्न करना है। स्वामी जी ने इस प्रकार के भेदभाव की कड़ी समीक्षा की है और स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान रूप से सभी विधियों का विधान किया है।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

संस्कृता स्त्री पराशक्ति !!ओ३म्!! संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

स्वामी दयानन्द सरस्वती

दिनांक : 6 जून (वीरवार) से 12 जून (बुधवार), 2019 तक
स्थान:स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, ग्राम टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

स्वामी इन्द्रवेश

पाँच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णत: नि:शुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- शिविरार्थियों की आयु 15 वर्ष से ऊपर होनी चाहिए।
- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाईल अपने साथ लेकर न आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, गणवेश (सफेद सैंडो बनियान, सफेद जूते, सफेद जुराब व लाल रंग का नेकर) व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक युवक 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र, अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई, 2019 तक अवश्य जमा करवायें। स्थान सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस पांच दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं, आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अत: आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग करायें। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट 'युवा निर्माण अभियान' के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइंड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से युवक चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक (हरियाणा), मो.:- 9416630916, 9354840454

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।